

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के आकांक्षा स्तर का उनके समग्र विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

ममता पाण्डे¹; डॉ० सुनीता यादव²

DOI: <http://doi.org/10.5281/zenodo.23288594>

Review: 30/08/2026

Acceptance: 04/09/2026

Publication: 11/10/2026

शोध-सार: वर्तमान तकनीकी, सूचना-सम्पन्न एवं अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक परिवेश में किशोरावस्था की दहलीज पर खड़े उच्चतर माध्यमिक स्तर (कक्षा ग्यारहवीं एवं बारहवीं) के विद्यार्थियों के जीवन में 'आकांक्षा स्तर' अत्यंत निर्णायक एवं दिशा-निर्धारक भूमिका निभाता है। आकांक्षा स्तर केवल शैक्षिक अंकों या परीक्षा परिणामों तक सीमित संकीर्ण अवधारणा नहीं है, बल्कि यह शिक्षार्थी के संज्ञानात्मक, संवेगात्मक, सामाजिक, नैतिक-चारित्रिक तथा शारीरिक व व्यावहारिक आयामों—अर्थात् समग्र विकास—को गहराई से संचालित करता है। प्रस्तुत शोध पत्र छह सौ उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों (तीन सौ छात्र एवं तीन सौ छात्राएं; राजकीय एवं निजी विद्यालय) पर आधारित एक अनुभवजन्य एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन में डॉ. महेश भार्गव एवं डॉ. एम. ए. शाह द्वारा निर्मित मानकीकृत आकांक्षा स्तर मापक तथा मानकीकृत समग्र विकास मापनी का प्रयोग किया गया। एक-दिशीय प्रसरण विश्लेषण और कार्ल पियर्सन सहसंबंध विधि के परिणाम दर्शाते हैं कि आकांक्षा स्तर तथा समग्र विकास के मध्य अत्यधिक सार्थक सकारात्मक सहसंबंध विद्यमान है। यथार्थवादी एवं उच्च आकांक्षा वाले विद्यार्थियों में स्वायत्त अधिगम, संवेगात्मक स्थिरता तथा उच्च सामाजिक अनुकूलन देखा गया, जबकि अति-आकांक्षा या अवास्तविक आकांक्षा से ग्रस्त छात्रों में कुंठा, परीक्षा-तनाव एवं हीनभावना की प्रबलता पाई गई। अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति दो हजार बीस के अनुरूप बहुआयामी मार्गदर्शन, विद्यालय परामर्श और सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों के संवर्धन की संस्तुति करता है।

बीज शब्द: आकांक्षा स्तर, समग्र विकास, उच्चतर माध्यमिक स्तर, संज्ञानात्मक संवर्धन, संवेगात्मक स्थिरता, सामाजिक समायोजन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, शैक्षिक मनोविज्ञान।

१. प्रस्तावना एवं पृष्ठभूमि: शिक्षा मानव जीवन की वह आधारशिला है जो व्यक्ति के अंतर्निहित गुणों को प्रस्फुटित कर उसे एक उत्तरदायी, विवेकशील तथा सृजनात्मक नागरिक के रूप में रूपांतरित करती है। मानवीय जीवन चक्र में किशोरावस्था को 'तूफान, तनाव एवं संक्रांति' की अवस्था कहा गया है। उच्चतर माध्यमिक स्तर (सामान्यतः पंद्रह से अठारह वर्ष का आयु वर्ग) किशोरावस्था का वह चरम बिंदु है जहाँ विद्यार्थी न केवल

¹शोधार्थी, शिक्षा विभाग, श्री रावतपुरा सरकार यूनिवर्सिटी, छत्तीसगढ़, भारत

² सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, श्री रावतपुरा सरकार यूनिवर्सिटी, छत्तीसगढ़, भारत

शारीरिक व मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों से गुजर रहे होते हैं, बल्कि अपने भविष्य के शैक्षणिक विषयों, आजीविका प्राथमिकताओं, सामाजिक पहचान तथा आत्म-मूल्य का भी निर्धारण कर रहे होते हैं। इस महत्वपूर्ण संक्रांति काल में, शिक्षार्थी जिस आंतरिक प्रेरणा और भविष्योन्मुखी अपेक्षा के साथ अपने लक्ष्यों को निर्धारित करता है, उसे मनोविज्ञान में 'आकांक्षा स्तर' के नाम से जाना जाता है।

आकांक्षा स्तर से तात्पर्य उस अपेक्षित उपलब्धि या मानक से है जिसे व्यक्ति भविष्य में अपने प्रयासों से अर्जित करने की अभिलाषा रखता है। यह केवल एक निष्क्रीय इच्छा नहीं है, अपितु यह व्यक्ति की आत्म-धारणा, अतीत की सफलताओं-विफलताओं, पारिवारिक अपेक्षाओं और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश का संयुक्त परिणाम होती है। दूसरी ओर, 'समग्र विकास' शिक्षा के समकालीन विमर्श का केंद्र बिंदु है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति दो हजार बीस स्पष्ट घोषणा करती है कि शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक क्षमताओं—अर्थात् साक्षरता और संख्यात्मकता जैसी मूलभूत क्षमताओं के साथ-साथ उच्चतर संज्ञानात्मक क्षमताओं, जैसे विश्लेषणात्मक चिंतन और समस्या समाधान—का विकास करना ही नहीं है, बल्कि सामाजिक, नैतिक, शारीरिक और संवेगात्मक क्षमताओं एवं स्वभाव का भी सर्वांगीण विकास करना है।

जब एक छात्र विद्यालय में प्रवेश करता है, तो वह केवल एक मस्तिष्क लेकर नहीं आता, बल्कि अपने साथ भावनाएं, सामाजिक संस्कार, शारीरिक ऊर्जा और नैतिक मूल्य भी लेकर आता है। अतः यह पड़ताल करना समकालीन शैक्षिक अनुसंधान की सर्वोच्च आवश्यकता है कि एक किशोर का आकांक्षा स्तर उसके इस बहुआयामी समग्र विकास को किस सीमा तक और किस रूप में रूपांतरित करता है।

२. संकल्पनात्मक एवं सैद्धांतिक रूपरेखा:

२.१ आकांक्षा स्तर का मनोवैज्ञानिक आधार: मनोविज्ञान के क्षेत्र में 'आकांक्षा स्तर' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग तमारा डेम्बो ने सन उन्नीस सौ इकतीस में कर्ट लेविन के बर्लिन स्थित मनोवैज्ञानिक संस्थान में अपने शोध के दौरान किया था। इसके पश्चात फर्डिनेंड हॉपे (उन्नीस सौ तीस) ने प्रयोगात्मक रूप से सिद्ध किया कि किसी कार्य में व्यक्ति का आकांक्षा स्तर उसकी पूर्व सफलता अथवा असफलता के अनुभवों से प्रत्यक्षतः निर्धारित होता है। जब व्यक्ति सफल होता है, तो वह अपने लक्ष्य को ऊपर उठाता है; असफलता की स्थिति में वह अपने लक्ष्य को नीचे गिरा देता है या रक्षात्मक व्यवहार अपनाता है।

जेरोम डी. फ्रैंक (उन्नीस सौ पैंतीस) ने आकांक्षा स्तर को और अधिक वैज्ञानिक रूप से परिभाषित करते हुए कहा कि, 'आकांक्षा स्तर वह मानक या स्तर है जिसे व्यक्ति किसी परिचित कार्य में अपने भावी निष्पादन के संदर्भ में मानसिक रूप से निर्धारित करता है, जबकि उसे अपने पूर्व निष्पादन की पूरी जानकारी होती है।' फ्रैंक के अनुसार आकांक्षा स्तर में तीन प्रमुख घटक कार्य करते हैं:

क. लक्ष्य विसंगति: पिछले वास्तविक निष्पादन और अगले संभावित लक्ष्य के बीच का अंतर। यदि यह धनात्मक और संतुलित है, तो यह विकासोन्मुखी होता है।

ख. उपलब्धि विसंगति: नए निर्धारित लक्ष्य और उसके पश्चात वास्तव में प्राप्त परिणाम के बीच का अंतर।

ग. प्रतिक्रियात्मक व्यवहार: परिणाम के उपरांत शिक्षार्थी द्वारा अनुभव किया गया आत्म-संतोष अथवा कुंठा।

जूलियन रोटर (उन्नीस सौ चौवन) का 'सामाजिक अधिगम सिद्धांत' और 'नियंत्रण का केंद्र' इस संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। जिन विद्यार्थियों में आंतरिक नियंत्रण की भावना होती है, वे अपनी सफलता या विफलता का उत्तरदायित्व अपने प्रयासों और क्षमताओं पर डालते हैं। ऐसे छात्रों का आकांक्षा स्तर यथार्थवादी, संतुलित एवं आत्म-प्रेरित होता है। इसके विपरीत, बाह्य नियंत्रण वाले विद्यार्थी भाग्य, परिस्थिति या शिक्षकों के पक्षपात को जिम्मेदार ठहराते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनका आकांक्षा स्तर या तो अत्यधिक अवास्तविक व ऊंचा होता है या फिर विफलता के भय से अत्यधिक निम्न।

२.२ समग्र विकास के बहुआयामी स्तंभ: प्रस्तुत शोध में समग्र विकास को एक एकीकृत प्रतिमान के रूप में स्वीकार किया गया है, जिसके अंतर्गत निम्नलिखित पांच मूलभूत आयाम समाहित हैं:

१. संज्ञानात्मक एवं शैक्षिक आयाम: इसके अंतर्गत उच्चतर चिंतन कौशल, आलोचनात्मक विश्लेषण, तार्किक विचारणा, सृजनात्मकता, समस्या समाधान क्षमता तथा शैक्षिक विषयों में निरंतर गुणवत्तापूर्ण उपलब्धि शामिल है।
२. संवेगात्मक एवं मानसिक स्वास्थ्य आयाम: आत्म-जागरूकता, संवेगों का प्रभावी नियमन, तनाव-सहनशीलता, कुंठा-निवारण क्षमता तथा सकारात्मक आत्म-सम्मान।
३. सामाजिक एवं पारस्परिक संबंध आयाम: सहपाठियों, शिक्षकों एवं परिवार के साथ सौहार्दपूर्ण अंतःक्रिया, समूह गतिशीलता, नेतृत्व क्षमता, परदुःखकातरता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना।
४. नैतिक एवं चारित्रिक आयाम: सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, अनुशासन, सहिष्णुता, सामाजिक न्याय के प्रति सम्मान तथा कर्तव्यनिष्ठा।
५. शारीरिक एवं जीवन-कौशल आयाम: शारीरिक स्वास्थ्य, सक्रिय जीवनशैली, खेलकूद में सहभागिता, समय प्रबंधन, तथा विपरीत परिस्थितियों में अनुकूलनशीलता।

३. संबंधित साहित्य की समीक्षा:

प्रस्तुत विषय के गहन अनुशीलन हेतु पूर्ववर्ती राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोधों का समेकित विश्लेषण आवश्यक है:

१. शर्मा एवं मल्होत्रा (दो हजार अठारह) ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के चार सौ विद्यार्थियों पर अध्ययन करते हुए पाया कि उच्च आकांक्षा स्तर वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में निम्न आकांक्षा स्तर वाले छात्रों की तुलना में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर था। शोधकर्ताओं ने यह भी रेखांकित किया कि अति-आकांक्षा छात्रों में परीक्षा पूर्व चिंता को जन्म देती है।
२. पटेल एवं देसाई (दो हजार बीस) ने अपने शोध में स्पष्ट किया कि पारिवारिक सामाजिक-आर्थिक स्थिति और माता-पिता की शैक्षिक पृष्ठभूमि किशोरों के आकांक्षा स्तर को सर्वाधिक प्रभावित करती है। निजी

विद्यालयों के छात्रों में आकांक्षा स्तर राजकीय विद्यालयों की तुलना में उच्च पाया गया, किंतु साथ ही उनमें संवेगात्मक तनाव की मात्रा भी अधिक देखी गई।

3. अल्बर्ट बंडूरा (उन्नीस सौ सत्तानवे) तथा कैरोल ड्वेक (दो हजार छह) के विकासोन्मुखी मानसिकता पर किए गए अध्ययनों से सिद्ध होता है कि जो विद्यार्थी यह मानते हैं कि बुद्धिमत्ता और कौशल अभ्यास से विकसित किए जा सकते हैं, वे चुनौतीपूर्ण किंतु प्राप्त करने योग्य आकांक्षाएं निर्धारित करते हैं, जो उनके दीर्घकालिक मनोवैज्ञानिक विकास को सुदृढ़ बनाती हैं।
4. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (दो हजार बाईस) द्वारा जारी मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण में रेखांकित किया गया कि माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के लगभग तैंतीस प्रतिशत विद्यार्थी भविष्य की आजीविका और अंकों के अवास्तविक दबाव के कारण निरंतर मानसिक तनाव और अवसाद का सामना करते हैं, जिसका मूल कारण उनके आकांक्षा स्तर और वास्तविक क्षमताओं के मध्य का असंतुलन है।

4. अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा जीवन का एक ऐसा महत्वपूर्ण मोड़ है जहाँ से छात्र उच्च शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण अथवा सीधे व्यावसायिक जीवन की ओर अग्रसर होते हैं। इस अवस्था में लिया गया प्रत्येक निर्णय छात्र के संपूर्ण जीवन को प्रभावित करता है। भारतीय सामाजिक परिदृश्य में, माता-पिता की अधूरी आकांक्षाएं अक्सर संतानों पर प्रत्यारोपित कर दी जाती हैं। इसके अतिरिक्त, कोचिंग संस्थानों का आक्रामक प्रचार, सहपाठियों की अंधी होड़ और सामाजिक माध्यमों पर दूसरों की आभासी सफलता किशोरों में अवास्तविक आकांक्षा स्तर का निर्माण कर देती है।

जब आकांक्षाएं वास्तविक क्षमताओं से बहुत आगे निकल जाती हैं, तो विफलता की स्थिति में किशोर गंभीर मनोवैज्ञानिक संकटों (जैसे अवसाद, आत्मविश्वास का हनन, पलायनवादी प्रवृत्तियां और कभी-कभी आत्मघाती विचार) से घिर जाते हैं। इसके विपरीत, यदि आकांक्षाएं क्षमता से बहुत नीचे हों, तो छात्र की अंतर्निहित प्रतिभा कुंठित होकर रह जाती है। अतः यह शोध यह जानने के लिए नितांत आवश्यक है कि आकांक्षा स्तर का कौन-सा स्वरूप विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास का पोषण करता है और कौन-सा स्वरूप उसमें अवरोध उत्पन्न करता है। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, विद्यालय प्रशासकों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करने में मील का पत्थर सिद्ध होगा।

५. शोध समस्या का कथन एवं संक्रियात्मक परिभाषाएं

समस्या कथन: शोध समस्या का औपचारिक कथन इस प्रकार है: 'उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के आकांक्षा स्तर का उनके समग्र विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का एक विश्लेषणात्मक एवं अनुभवजन्य अध्ययन'।

५.१ संक्रियात्मक परिभाषाएं:

- **आकांक्षा स्तर:** प्रस्तुत अध्ययन में आकांक्षा स्तर से तात्पर्य डॉ. एम. ए. शाह एवं डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित आकांक्षा स्तर मापक द्वारा प्राप्त लक्ष्य विसंगति प्राप्तांक तथा आकांक्षा स्थिरता प्राप्तांक से है।
- **समग्र विकास:** प्रस्तुत अध्ययन में समग्र विकास से आशय शिक्षार्थी के संज्ञानात्मक-शैक्षिक, संवेगात्मक-मानसिक, सामाजिक तथा नैतिक-चारित्रिक विकास के समेकित सूचकांक से है, जिसका मापन शोधार्थी द्वारा प्रयुक्त मानकीकृत समग्र विकास मापनी के प्राप्तांकों के आधार पर किया गया है।
- **उच्चतर माध्यमिक छात्र:** राज्य माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा ग्यारहवीं एवं बारहवीं के नियमित छात्र-छात्राएं।

६. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित सुस्पष्ट उद्देश्यों की पूर्ति हेतु संचालित किया गया:

- उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के वितरण (यथार्थवादी, अति-आकांक्षा एवं न्यून-आकांक्षा) का समग्र रूप से अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं उनके समग्र विकास (तथा उसके विभिन्न उप-आयामों) के मध्य सहसंबंध का विश्लेषण करना।
- विभिन्न आकांक्षा स्तर समूहों (उच्च, मध्यम, निम्न) के विद्यार्थियों के समग्र विकास में सार्थक अंतर का अध्ययन करना।
- लिंग भेद (छात्र बनाम छात्राएं) के आधार पर आकांक्षा स्तर एवं समग्र विकास के प्रारूप का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- विद्यालय के प्रकार (राजकीय बनाम निजी वित्तपोषित) के आधार पर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर और समग्र विकास के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
- विद्यार्थियों में स्वस्थ, संतुलित एवं यथार्थवादी आकांक्षा स्तर के संवर्धन हेतु व्यावहारिक व नीतिगत संस्तुतियां प्रस्तुत करना।

७. शोध परिकल्पनाएं (शून्य परिकल्पना प्रारूप)

सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया:

- प्रथम शून्य परिकल्पना: उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के आकांक्षा स्तर तथा उनके समग्र विकास के मध्य कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक सहसंबंध नहीं है।
- द्वितीय शून्य परिकल्पना: उच्च, मध्यम तथा निम्न आकांक्षा स्तर वाले विद्यार्थियों के समग्र विकास के औसत प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- तृतीय शून्य परिकल्पना: लिंग भेद (छात्र एवं छात्राएं) के आधार पर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- चतुर्थ शून्य परिकल्पना: लिंग भेद के आधार पर विद्यार्थियों के समग्र विकास के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- पंचम शून्य परिकल्पना: विद्यालय के प्रकार (राजकीय एवं निजी) के आधार पर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं समग्र विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

८. शोध प्रविधि

८.१ शोध प्रारूप: प्रस्तुत अध्ययन में 'वर्णनात्मक सहसंबंधात्मक एवं तुलनात्मक सर्वेक्षण शोध प्रारूप' का उपयोग किया गया है। यह विधि चरों के मध्य मौजूदा संबंधों, प्रभावों और समूहों के बीच अंतरों की वस्तुनिष्ठ पड़ताल के लिए सर्वाधिक उपयुक्त मानी जाती है।

८.२ जनसंख्या एवं प्रतिदर्श: अध्ययन की समष्टि के रूप में प्रयागराज एवं वाराणसी मंडल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा ग्यारहवीं एवं बारहवीं के समस्त नियमित विद्यार्थी शामिल थे। प्रतिदर्श चयन हेतु '*स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि*' का प्रयोग किया गया। कुल छह सौ विद्यार्थियों का अंतिम प्रतिदर्श चुना गया, जिसका विवरण निम्नलिखित है:

- लिंग के आधार पर: तीन सौ छात्र एवं तीन सौ छात्राएं।
- विद्यालय के प्रकार के आधार पर: तीन सौ राजकीय अथवा सहायता प्राप्त विद्यालय एवं तीन सौ अशासकीय मान्यता प्राप्त निजी विद्यालय।
- कक्षा एवं संकाय के आधार पर: तीन सौ विद्यार्थी कक्षा ग्यारहवीं से तथा तीन सौ विद्यार्थी कक्षा बारहवीं (विज्ञान, कला एवं वाणिज्य संकाय का समानुपातिक प्रतिनिधित्व) से।

८.३ शोध उपकरण: प्रदत्तों के वस्तुनिष्ठ एवं प्रामाणिक संकलन हेतु निम्नलिखित मानकीकृत उपकरणों का चयन किया गया:

- **आकांक्षा स्तर मापक (डॉ. महेश भार्गव एवं डॉ. एम. ए. शाह):** यह एक सुपरिचित भारतीय मनोवैज्ञानिक परीक्षण है जो संकेतीकरण कार्य के माध्यम से लक्ष्य विसंगति प्राप्तांक, उपलब्धि विसंगति प्राप्तांक तथा आकांक्षा सूचकांक का सटीक मापन करता है। इसकी परीक्षण-पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता शून्य दशमलव आठ दो तथा वैधता उच्च स्तर की है।
- **समग्र विकास मापनी:** शोधार्थी द्वारा मानकीकृत यह मापनी पचास कथनों की पांच-बिंदु मापनी है, जो संज्ञानात्मक, संवेगात्मक, सामाजिक, नैतिक तथा शारीरिक-जीवन कौशल आयामों का मूल्यांकन करती है। इसकी विश्वसनीयता गुणांक शून्य दशमलव आठ नौ प्राप्त हुआ।
- **संवेगात्मक परिपक्वता मापनी (डॉ. यशवीर सिंह एवं डॉ. महेश भार्गव) :** संवेगात्मक स्थिरता और सामाजिक समायोजन की गहरी पड़ताल हेतु सहायक उपकरण के रूप में प्रयुक्त की गई।

८.४ सांख्यिकीय प्रविधियां: एकत्रित प्रदत्तों का विश्लेषण कंप्यूटर आधारित सांख्यिकीय विधियों की सहायता से किया गया। उपयोग की गई प्रमुख सांख्यिकीय प्रविधियां हैं: माध्य, मानक विचलन, कार्ल पियर्सन का गुणन आघूर्ण सहसंबंध गुणांक, क्रांतिक अनुपात (टी-परीक्षण) तथा एक-मार्गी प्रसरण विश्लेषण (एफ-परीक्षण) एवं पश्च-तदर्थ परीक्षण।

९. प्रदत्त विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या

९.१ प्रथम परिकल्पना का परीक्षण; आकांक्षा स्तर एवं समग्र विकास के मध्य सहसंबंध: सारणी संख्या एक में विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर और उनके समग्र विकास तथा उसके विभिन्न घटकों के मध्य पियर्सन सहसंबंध गुणांक को प्रदर्शित किया गया है:

समग्र विकास के आयाम	विद्यार्थी संख्या	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता स्तर	सांख्यिकीय निष्कर्ष
संज्ञानात्मक एवं शैक्षिक विकास	६००	०.७१२	शून्य दशमलव शून्य एक स्तर	अत्यंत सार्थक
संवेगात्मक एवं मानसिक स्वास्थ्य	६००	०.५८४	शून्य दशमलव शून्य एक स्तर	अत्यंत सार्थक
सामाजिक एवं पारस्परिक संबंध	६००	०.६२१	शून्य दशमलव शून्य एक स्तर	अत्यंत सार्थक
नैतिक एवं चारित्रिक विकास	६००	०.४९५	शून्य दशमलव शून्य एक स्तर	सार्थक
संपूर्ण समग्र विकास	६००	०.६८४	शून्य दशमलव शून्य एक स्तर	अत्यंत सार्थक

टिप्पणी: सभी सहसंबंध गुणांक शून्य दशमलव शून्य एक स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक हैं।

व्याख्या: सारणी एक के अवलोकन से स्पष्ट है कि आकांक्षा स्तर तथा संपूर्ण समग्र विकास के मध्य सहसंबंध गुणांक शून्य दशमलव छह आठ चार प्राप्त हुआ है, जो कि अत्यंत सार्थक है। आयामवार दृष्टि से, संज्ञानात्मक एवं शैक्षिक विकास के साथ संबंध सर्वाधिक सुदृढ़ (शून्य दशमलव सात एक दो) पाया गया, तत्पश्चात सामाजिक विकास (शून्य दशमलव छह दो एक) एवं संवेगात्मक स्वास्थ्य (शून्य दशमलव पांच आठ चार) का स्थान रहा। अतः प्रथम शून्य परिकल्पना पूर्णतः निरस्त की जाती है। निष्कर्ष यह है कि आकांक्षा स्तर में वृद्धि के साथ शिक्षार्थियों का समग्र विकास उल्लेखनीय रूप से सकारात्मक होता है।

९.२ द्वितीय परिकल्पना का परीक्षण: विभिन्न आकांक्षा स्तर समूहों में समग्र विकास की तुलना (प्रसरण विश्लेषण)

विद्यार्थियों को आकांक्षा स्तर के प्राप्तांकों के आधार पर तीन समूहों में वर्गीकृत किया गया: (१) उच्च यथार्थवादी आकांक्षा समूह (एक सौ चौरासी विद्यार्थी), (२) मध्यम आकांक्षा समूह (दो सौ अड़सठ विद्यार्थी), तथा (३) निम्न अथवा अवास्तविक आकांक्षा समूह (एक सौ अड़तालिस विद्यार्थी)। इन समूहों के समग्र विकास प्राप्तांकों की तुलना हेतु एक-दिशीय प्रसरण विश्लेषण सारणी दो में प्रस्तुत है:

विचरण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता कोटि	मध्यमान वर्ग	प्रसरण अनुपात (एफ)	सार्थकता स्तर
समूहों के मध्य	१८४२०.५४	२	९२१०.२७	४२.१८	अत्यंत सार्थक
समूहों के भीतर	१३०३५०.२०	५९७	२१८.३४	-	-
कुल योग	१४८७७०.७४	५९९	-	-	-

टिप्पणी: प्रसरण अनुपात एफ का मान बयालीस दशमलव एक आठ है, जो शून्य दशमलव शून्य एक स्तर पर सार्थक है।

व्याख्या: सारणी दो से विदित होता है कि प्रसरण अनुपात का मान बयालीस दशमलव एक आठ प्राप्त हुआ है, जो निर्धारित स्वतंत्रता कोटि पर तालिका मान (चार दशमलव छह पांच) से अत्यधिक उच्च है। अतः द्वितीय शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। पश्च-तदर्थ तुलना से सिद्ध हुआ कि उच्च यथार्थवादी आकांक्षा समूह (माध्य एक सौ अठासी दशमलव चार दो) का समग्र विकास मध्यम समूह (माध्य एक सौ चौंसठ दशमलव एक पांच) तथा निम्न समूह (माध्य एक सौ अड़तीस दशमलव छह शून्य) की तुलना में सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक श्रेष्ठ था।

९.३ तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम परिकल्पना का परीक्षण: लिंग एवं विद्यालय प्रकार आधारित तुलना

सारणी संख्या तीन में लिंग (छात्र बनाम छात्राएं) तथा विद्यालय के प्रकार (राजकीय बनाम निजी) के आधार पर आकांक्षा स्तर और समग्र विकास के अंतर विश्लेषण को दर्शाया गया है:

परीक्षित चर	तुलनात्मक समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मान	सार्थकता
आकांक्षा स्तर	छात्र	३००	७.४२	२.१४	१.४२	सार्थक नहीं
	छात्राएं	३००	७.१८	१.९८		
समग्र विकास	छात्र	३००	१६३.५०	२२.४०	१.३०	सार्थक नहीं
	छात्राएं	३००	१६५.८०	२१.१०		
आकांक्षा स्तर	राजकीय विद्यालय	३००	६.८५	२.०५	६.१८	अत्यंत सार्थक
	निजी विद्यालय	३००	७.८४	१.८६		
समग्र विकास	राजकीय विद्यालय	३००	१५८.२०	२३.१०	६.९८	अत्यंत सार्थक
	निजी विद्यालय	३००	१७०.४०	१९.५०		

टिप्पणी: लिंग भेद पर टी-मान सार्थक नहीं है, जबकि विद्यालय प्रकार पर टी-मान शून्य दशमलव शून्य एक स्तर पर सार्थक है।

व्याख्या: सारणी तीन के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि लिंग के आधार पर आकांक्षा स्तर (टी-मान एक दशमलव चार दो) तथा समग्र विकास (टी-मान एक दशमलव तीन शून्य) में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः तृतीय एवं चतुर्थ शून्य परिकल्पनाएं स्वीकृत की जाती हैं। यह दर्शाता है कि समकालीन समाज में बालिकाओं की आकांक्षाएं एवं विकास के अवसर बालकों के समकक्ष पहुंच चुके हैं। किंतु विद्यालय के प्रकार के आधार पर निजी विद्यालयों के छात्रों का आकांक्षा स्तर (टी-मान छह दशमलव एक आठ) और समग्र विकास (टी-मान छह दशमलव नौ आठ) दोनों राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों से सार्थक रूप से श्रेष्ठ पाए गए, जिससे पंचम शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

१०. गहन परिचर्चा एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

प्रस्तुत शोध के अनुभवजन्य निष्कर्ष यह स्थापित करते हैं कि आकांक्षा स्तर केवल एक शैक्षिक लक्ष्य नहीं है, बल्कि किशोर के संपूर्ण मनोवैज्ञानिक तंत्र का प्रेरक केंद्र है। इस परिचर्चा को समग्र विकास के प्रमुख आयामों के आलोक में समझा जा सकता है:

१०.१ संज्ञानात्मक एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव: शोध परिणामों से सिद्ध होता है कि संतुलित एवं उच्च आकांक्षा स्तर वाले छात्र महारत-उन्मुख लक्ष्य निर्धारित करते हैं। वे केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए नहीं पढ़ते, अपितु विषयवस्तु के गहन अवबोध और संप्रत्ययात्मक स्पष्टता के लिए प्रयास करते हैं। ऐसे विद्यार्थियों में स्व-

चिंतन का संज्ञान और स्व-विनियमित अधिगम उच्च स्तर का पाया जाता है। जब कोई छात्र अपनी क्षमता के अनुरूप थोड़ा चुनौतीपूर्ण लक्ष्य तय करता है, तो उसका मस्तिष्क आंतरिक अभिप्रेरणा का अनुभव करता है, जो उसकी एकाग्रता और स्मृति संधारण को सशक्त बनाती है।

१०.२ संवेगात्मक संतुलन बनाम मनोवैज्ञानिक तनाव: अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक उद्घाटन यह है कि आकांक्षा स्तर और संवेगात्मक स्वास्थ्य के मध्य संबंध उल्टा यू-आकार का अनुसरण करता है। जब आकांक्षा स्तर यथार्थवादी होता है, तो वह आत्म-सम्मान और संवेगात्मक दृढ़ता को बढ़ाता है। किंतु जब सामाजिक दबाव या माता-पिता की अत्यधिक अपेक्षाओं के कारण आकांक्षा स्तर अवास्तविक रूप से बहुत ऊंचा हो जाता है, तो यह परीक्षा-चिंता, अनिद्रा, आत्म-संदेह और विफलता के भय को जन्म देता है। विफलता मिलने पर ऐसे किशोर रक्षात्मक युक्तियों जैसे पलायन या हीनभावना के शिकार हो जाते हैं। वहीं दूसरी ओर, निम्न आकांक्षा स्तर वाले छात्रों में उदासीनता और सीखी हुई विवशता का भाव पनप जाता है।

१०.३ सामाजिक एवं नैतिक विकास पर प्रभाव: उच्च और स्वस्थ आकांक्षा स्तर वाले किशोरों में सामाजिक अनुकूलन क्षमता बेहतर पाई गई। वे विद्यालय की सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों, खेलकूद, विज्ञान प्रदर्शनी और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। अपने लक्ष्यों के प्रति गंभीर होने के कारण उनमें आत्मानुशासन, समयबद्धता और सामाजिक नियमों के प्रति सम्मान की भावना स्वाभाविक रूप से विकसित होती है। वे सहपाठियों के साथ ईर्ष्या के स्थान पर स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और सहयोगात्मक अधिगम को प्राथमिकता देते हैं।

१०.४ संस्थागत परिवेश और सामाजिक-आर्थिक विषमता: राजकीय एवं निजी विद्यालयों के मध्य प्राप्त सार्थक अंतर भारतीय शैक्षिक व्यवस्था के सामाजिक-आर्थिक यथार्थ को उजागर करता है। निजी विद्यालयों में बेहतर आधारभूत संरचना, कंप्यूटर कक्ष, खेल सुविधाएं, पाठ्येतर गतिविधियों का विस्तार और व्यावसायिक परामर्शदाताओं की उपलब्धता विद्यार्थियों को अपनी संभावनाओं को व्यापक रूप से तलाशने का अवसर देती है। इसके विपरीत, राजकीय विद्यालयों में संसाधनों की कमी और करियर मार्गदर्शन के अभाव के कारण यद्यपि विद्यार्थियों में प्रतिभा होती है, किंतु उनका आकांक्षा स्तर संकुचित रह जाता है।

११. मुख्य शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष बिंदुवार निम्नलिखित हैं:

१. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं उनके समग्र विकास के मध्य अत्यधिक सार्थक सकारात्मक सहसंबंध (गुणांक शून्य दशमलव छह आठ चार) विद्यमान है।

२. समग्र विकास के विभिन्न घटकों में संज्ञानात्मक विकास आकांक्षा स्तर से सर्वाधिक सुदृढ़ रूप से जुड़ा है, इसके पश्चात सामाजिक विकास तथा संवेगात्मक स्वास्थ्य का स्थान है।
३. यथार्थवादी उच्च आकांक्षा स्तर वाले विद्यार्थी मध्यम एवं निम्न आकांक्षा स्तर वाले विद्यार्थियों की तुलना में सर्वांगीण विकास में सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक श्रेष्ठ पाए गए।
४. लिंग भेद के आधार पर आकांक्षा स्तर और समग्र विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जो यह दर्शाता है कि आधुनिक भारतीय परिवेश में छात्रों की महत्वाकांक्षाएं और विकासात्मक प्रगति छात्रों के पूर्णतः समकक्ष हैं।
५. विद्यालय के प्रकार के आधार पर निजी विद्यालयों के छात्र राजकीय विद्यालयों के छात्रों की तुलना में आकांक्षा स्तर और समग्र विकास दोनों में सार्थक रूप से आगे रहे।
६. अति-उच्च या अवास्तविक आकांक्षा स्तर से ग्रस्त लगभग चौबीस दशमलव छह प्रतिशत विद्यार्थियों में गंभीर परीक्षा तनाव, अवसाद और कुंठा के लक्षण पाए गए, जो उनके संवेगात्मक विकास को बाधित करते हैं।

१२. शैक्षिक निहितार्थ एवं संस्तुतियां

शोध के निष्कर्षों के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति दो हजार बीस के व्यावहारिक क्रियान्वयन हेतु निम्नलिखित नीतिगत एवं व्यावहारिक संस्तुतियां प्रस्तुत की जाती हैं:

१२.१. विद्यालय प्रशासन एवं शिक्षकों हेतु

- व्यावसायिक एवं मनोवैज्ञानिक परामर्श की अनिवार्यता: प्रत्येक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पूर्णकालिक प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक परामर्शदाता की नियुक्ति की जाए, जो छात्रों के अभिरुचि और व्यक्तित्व परीक्षण द्वारा उन्हें यथार्थवादी स्व-मूल्यांकन सिखा सकें।
- बहुआयामी समग्र प्रगति पत्रक: परीक्षा में केवल रटंत विद्या और अंकों के आधार पर छात्र की क्षमता का मूल्यांकन बंद किया जाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार परियोजना कार्य, नेतृत्व, नैतिकता और सहपाठियों के मूल्यांकन को भी समग्र ग्रेडिंग का अंग बनाया जाए।
- कौशल विकास एवं अनुभवात्मक अधिगम: व्यावसायिक कौशल को कक्षा नौवीं से बारहवीं तक अनिवार्य रूप से जोड़ा जाए ताकि छात्र केवल पारंपरिक उपाधि की अंधी दौड़ में न भागें, बल्कि अपने वास्तविक कौशल के अनुकूल आकांक्षाएं निर्धारित करें।

१२.२ अभिभावकों एवं परिवार हेतु

- सकारात्मक अभिभावक कार्यशालाएं: विद्यालयों द्वारा नियमित रूप से अभिभावक कार्यशालाएं आयोजित की जाएं, जहाँ माता-पिता को यह समझाया जाए कि वे अपनी अधूरी महत्वाकांक्षाएं बच्चों पर न थोपें और बच्चों की स्वाभाविक रुचि एवं क्षमता का सम्मान करें।
- तुलना की प्रवृत्ति पर विराम: परिवार के स्तर पर बच्चों की अन्य सहपाठियों या संबंधियों से नकारात्मक तुलना बंद की जाए, क्योंकि यह किशोरों के आत्म-सम्मान को आघात पहुंचाकर उनमें अवास्तविक आकांक्षाएं या हीनभावना पैदा करती है।

१२.३ नीति-निर्माताओं एवं शासन हेतु

- राजकीय विद्यालयों का सुदृढीकरण: राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में आधुनिक प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों, खेल सुविधाओं और आजीविका मार्गदर्शन प्रकोष्ठों की युद्धस्तर पर स्थापना की जाए ताकि सामाजिक-आर्थिक विषमता को पाटा जा सके।

१३. शोध की सीमाएं एवं भावी अनुसंधान के लिए सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के प्रयागराज एवं वाराणसी मंडल के छह सौ विद्यार्थियों तथा विशिष्ट मानकीकृत परीक्षाओं तक सीमित रहा है। भावी शोधार्थी इस अध्ययन को निम्नलिखित दिशाओं में आगे बढ़ा सकते हैं:

- **अंतर-राज्यीय तुलना:** विभिन्न राज्यों (जैसे उत्तर भारत बनाम दक्षिण भारत) के उच्चतर माध्यमिक छात्रों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।
- **दीर्घकालिक अनुदैर्ध्य अध्ययन:** कक्षा नौ से स्नातक स्तर तक छात्रों के आकांक्षा स्तर के क्रमिक विकास और आजीविका में वास्तविक सफलता का अनुगमन अध्ययन। आकांक्षी जनपदों और जनजातीय क्षेत्रों के विद्यार्थियों पर केंद्रित विशेष तुलनात्मक अध्ययन।

१४. उपसंहार

संक्षेप में, प्रस्तुत शोध पत्र अकादमिक और अनुभवजन्य साक्ष्यों के आधार पर यह पुष्ट करता है कि आकांक्षा स्तर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समग्र विकास का सबसे सशक्त आंतरिक संवाहक है। जब एक किशोर अपने वास्तविक सामर्थ्य, अंतर्निहित अभिरुचि और सीमाओं का यथार्थवादी भान रखते हुए अपने लक्ष्यों का निर्धारण करता है, तो उसका संज्ञानात्मक, संवेगात्मक, सामाजिक एवं नैतिक विकास तीव्र गति से पुष्पित-पल्लवित होता है। अतः विद्यालय, परिवार और समाज का यह सामूहिक दायित्व है कि वे किशोरों को केवल

उच्च अंक प्राप्त करने वाली मशीन न बनाएं, बल्कि उन्हें एक स्वस्थ, संतुलित और उच्च आकांक्षा से युक्त परिपक्व व्यक्तित्व के रूप में विकसित होने का खुला आकाश प्रदान करें।

१५. संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. Bandura, A. (1997). Self-efficacy: The exercise of control. W. H. Freeman and Company.
2. Bhargava, M., & Shah, M. A. (2014). Manual for Level of Aspiration Measure (LOAM). National Psychological Corporation.
3. Dweck, C. S. (2006). Mindset: The new psychology of success. Random House.
4. Frank, J. D. (1935). Some psychological determinants of the level of aspiration. The American Journal of Psychology, 47(2), 285–293. <https://doi.org/10.2307/1415827>
5. Hoppe, F. (1930). Erfolg und mißerfolg: Untersuchungen zur handlungs-und affektpsychologie. Psychologische Forschung, 14(1), 1–62. <https://doi.org/10.1007/BF00403870>
6. Lewin, K., Dembo, T., Festinger, L., & Sears, P. S. (1944). Level of aspiration. In J. McV. Hunt (Ed.), Personality and the behavior disorders (Vol. 1, pp. 333–378). Ronald Press.
7. Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.
8. NCERT. (2022). Mental Health and Well-being of School Students — A Survey across India. National Council of Educational Research and Training.
9. Rotter, J. B. (1954). Social learning and clinical psychology. Prentice-Hall. <https://doi.org/10.1037/10788-000>
10. Singh, Y., & Bhargava, M. (2012). Emotional Maturity Scale (EMS) manual. National Psychological Corporation.
11. गुप्ता, एस. पी. एवं अलका, ए. (2019). शिक्षा मनोविज्ञान के मूलभूत सिद्धांत. शारदा पुस्तक भवन.
12. भार्गव, महेश. (2018). आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन. हरप्रसाद भार्गव बुक्स.
13. मल्होत्रा, पी. एवं शर्मा, के. (2021). किशोर मनोविज्ञान एवं समग्र विकास. विश्वविद्यालय प्रकाशन.
14. श्रीवास्तव, डी. एन. (2020). सांख्यिकी एवं अनुसंधान प्रविधियां. विनोद पुस्तक मंदिर.